इक्कीसवीं सदी के हिंदी उपन्यासों में पीढ़ी अंतराल के सामाजिक आयाम

(वृद्ध-जीवन के विशेष संदर्भ में)

दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी) दयालबाग़, आगरा

के अंतर्गत हिंदी विषय में पी-एच.डी. उपाधि हेतु शोध प्रबंध की

प्रस्तावित रूपरेखा

शोध निर्देशिका

डॉ. सुमन शर्मा

एसोसिएट प्रोफ़ेसर

हिंदी विभाग, कला संकाय

शोधार्थी

भारती शर्मा

हिंदी विभाग, कला संकाय

दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी)

दयालबाग़, आगरा-282005

2022

विषय प्रवेश:-

"साहित्य जीवन की आलोचना है।"

-प्रेमचंद

साहित्य मानव जीवन के गुण एवं दोषों को उद्घाटित करता है। साहित्य समाज में प्रचलित मानव की गतिविधियों को प्रदर्शित करता है। साहित्य सदैव ही समाज का पथ-प्रदर्शक रहा है। वैदिक साहित्य हो या आधुनिक साहित्य इसका प्रयास यथार्थ से अवगत कराते हुए आदर्शों की ओर उन्मुख करना रहा है। साहित्य समाज का दर्पण ही नहीं, अपितु उसे प्रगतिशील बनाने वाला सदा-सर्वदा निर्माता भी है क्योंकि कोई भी रचनात्मक साहित्य लोक-कल्याण को दृष्टि में रखकर लिखा जाता है जो समाज को अवनति से उन्नति की ओर ले जाता है। समाज कई परिवारों का संगठन है तो समाज की घटनाएं भी तो परिवार की ही घटनाओं का प्रतिरूप होगा। भारतीय संस्कृति और सभ्यता में संयुक्त परिवार वाला समाज प्रमुख रहा है। परिवार में दादा-दादी जैसे बड़े-बुजुर्ग एवं माता-पिता अपनी संस्कृति एवं संस्कारों को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुंचाते हैं, ताकि आने वाली पीढ़ी इन संस्कारों से अवगत हो सके। प्राचीन भारतीय समाज की एक बड़ी विशेषता संयुक्त परिवार रही है। जहां कोई बड़ा बुजुर्ग ही पूरे परिवार का मुखिया होता है। उसका कहा गया प्रत्येक वाक्य सदस्यों के लिए आप्तवाक्य या ब्रहमवाक्य के समान पालन करने जैसा आवश्यक होता है। भारतीय धर्मग्रंथ, वैदिक साहित्य तथा इतिहास इसके साक्षी हैं कि बड़े बुजुर्गों के अनुभवों एवं परामर्शों को मानकर उनका लाभ उठाने वाली युवा पीढ़ी अपने भविष्य को उज्जवल करने में सक्षम हो पाती है। हमारे धर्मग्रंथों में भी इसका प्रमाण देखा जा सकता है। रामायण में पिता के प्रति आदर-सम्मान का भाव प्रत्येक पीढ़ी के लिए एक आदर्श स्थापित करता है। अपने पिता की आज्ञा मानकर राम ने वनवास जैसे कठोर जीवन संघर्ष को प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार कर अपने परिवार को कलह और विघटन से बचाया, जिससे कि पिता दशरथ अपने वचनों का पालन कर सकें। इसी रामायण में श्रवण कुमार की महान मातृ-भक्ति और पितृ-भक्ति की भी अभिव्यक्ति की गई है। वह अपने माता-पिता की तीर्थ यात्रा की इच्छापूर्ति उन्हें अपने कंधों पर बिठाकर करता है और उनकी सेवा कर

उसने महान ख्याति प्राप्त की। इसके विपरीत महाभारत में देखें तो इसमें भीष्म पितामह, द्रोणाचार्य, विदुर एवं कृपाचार्य जैसे महान अनुभवी वृद्ध पुरुष हैं जो दुर्योधन, दुशासन, कर्ण जैसे यौवन-शक्ति से भरी युवा पीढ़ी को बार-बार समझाते रहे, परामर्श देते रहे कि पांडवों से युद्ध करने में हानि और अहित ही अहित है। यह धर्म-अधर्म का युद्ध है, इसमें धर्म का साथ देने वाले पांडव ही विजयी होंगें। किंतु अहंकारवश दुर्योधन ने अपने बड़े-बुजुर्गों की सदा अवहेलना ही की और उन्हें बार-बार उपेक्षित किया, जिसका परिणाम महाविनाश के रूप में देखा गया। इस युद्ध के बाद न तो वृद्ध बचे और न ही युवा कौरववंश, सब कुछ नष्ट हो गया। उधर बड़े-बुजुर्गों का सम्मान करने वाले, उनके आदर्शों एवं अनुभवों के मार्ग पर चलने वाले पांडव विजयी हुए। वे अंत तक अपने बुजुर्गों का मान बढ़ाए रखने में सक्षम रहे। जब भीष्म पितामह शर-शैया पर लेटे हुए थे तब भी वह शांति, नीति, अहिंसा एवं राजधर्म आदि का उपदेश अपने जीवनानुभवों के आधार पर युधिष्ठिर को देते हैं, जिन्हें युधिष्ठिर अंगीकार कर अपने राजधर्म का निर्वहन करते हैं। भारतीय इतिहास में भी यही आदर्श देखा जा सकता है कि नंदवंशी राजा ने जिस वृद्ध चाणक्य की उपेक्षा एवं अवहेलना की, उसी वृद्ध के अनुभवों के मार्ग पर चलकर युवा चंद्रगुप्त ने शक्तिशाली कुख्यात नंदवंश को जड़ से उखाड़ दिया और अपना गुप्त साम्राज्य स्थापित कर लिया। गुलामी के चंगुल में फंसे देश को वृद्ध महात्मा गांधी के नेतृत्व में संगठित होकर पराधीनता से छुटकारा मिल सका। अतः इस सत्य को नकारा नहीं जा सकता कि राष्ट्र तथा मानव विकास का मार्ग कहीं-न-कहीं बड़े-बुजुर्गों के जीवन के अनुभवों का ही परिणाम रहा है। किंतु आधुनिकता बोध का यह युग व्यक्ति मोह के स्थान पर वस्तु मोह का युगधर्म होता जा रहा है, जहां मनुष्य को मनुष्य से अधिक लगाव अपनी वस्तुओं से होने लगा है। भारतीय संस्कृति में संयुक्त परिवार का बड़ा महत्व रहा है किंतु आधुनिक युग में पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव के कारण ये परिवार एकाकी परिवार के रूप में विघटित होते जा रहे हैं। परिवार के सदस्यों के मध्य बढ़ती वैचारिकशून्यता समाज में एकाकीपन, संवेदनशून्यता एवं मूल्यहीनता को बढ़ावा दे रही है। जैसे कि वर्णन किया जा चुका है कि प्राचीन संस्कृति में बड़े-बुजुर्गों का बहुत आदर सम्मान दिया जाता था एवं उनके विचारों एवं अनुभवों को अत्यधिक महत्व दिया जाता था। आज भौतिक वस्तुओं की चकाचौंध में व्यक्ति इतना

स्वार्थी होता जा रहा है कि केवल अपनी पत्नी और बच्चों को ही अपना पूरा परिवार समझता है और माता-पिता, दादा-दादी आदि को साथ नहीं रखना चाहता। उन्हें वृद्ध-आश्रम का मार्ग दिखाने में ही अपना हित समझता है। इसीलिए वृद्ध-आश्रमों की संख्या दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है। एक परोपकारी संगठन **हेल्प एज इंडिया** के द्वारा सर्वेक्षण किया गया, जिसमें 2090 लोगों ने भाग लिया। इससे पता चला कि 35% ऐसे लोग हैं जिन्हें बड़े-बुजुर्गों की सेवा करने में कोई प्रसन्नता नहीं होती और 29% लोग वृद्धों का वृद्ध-आश्रम में रहना स्वीकार करते हैं। वे सामाजिक दबाव के कारण उन्हें अपने साथ रख भी लेते हैं तो वहां वृद्धों की स्थिति बहुत दयनीय दिखाई पड़ती है।

उनकी बात-बात पर उपेक्षा की जाती है। उन्हें बड़े-बूढ़े और परंपरावादी कहकर चुप करा दिया जाता है। वृद्ध महिलाओं को अपने ही घर में नौकरानियों की भांति जीवन व्यतीत करना पड़ता है। युवा पीढ़ी को इस तरह की सोच नहीं रखनी चाहिए। उन्हें निष्क्रिय, शिथिल, बोझ और उपेक्षा का पात्र नहीं समझना चाहिए क्योंकि बुढ़ापा कोई रोग नही बल्कि यह एक अनिवार्य प्राकृतिक जैविक प्रक्रिया है। वृद्धावस्था मनुष्य की बाल्यावस्था, यौवनावस्था, प्रौढ़ावस्था से गुजरती हुए आने वाली अवस्था है। सरकार ने 60 वर्ष या उसके बाद की उम्र वाले व्यक्तियों को वृद्धावस्था में माना है। हमारे देश में लगभग 10.5 करोड़ बुजुर्ग व्यक्ति हैं जिनकी संख्या 2050 तक बढ़कर लगभग 32 करोड़ हो जाएगी। दुनिया के सभी देशों में भारत में बुजुर्गों की संख्या सबसे अधिक है। यह व्यक्ति की वह व्यवस्था है जहां पहुंचकर वह स्वयं को गौरवान्वित अनुभव करता है किंतु इस अवस्था में व्यक्तियों को बहुत-सी समस्याओं को सामना पड़ता है। जिस प्रकार दीपक के बुझने से पहले उसमें फड़फड़ाहट या कंपन आता है, उसी प्रकार वृद्धावस्था में भी कई प्रकार के कंपन आते हैं, जैसे- शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक, आर्थिक एवं सामाजिक इत्यादि। इस अवस्था में वह बच्चों की तरह कोमल, भावुक और संवेदनशील बन जाते हैं। उन्हें स्नेह की आवश्यकता होती है, इसलिए युवाओं को वृद्धों के प्रति संवेदनशील होना चाहिए। संतान विदेश जाकर बस जाती है और माता-पिता उनसे मिलने तथा उन्हें एक बार देखने को व्याकुल रहते हैं किंतु संतान को उनसे बात तक करने का समय नहीं मिलता। अतः संतान को उनकी संवेदनाएं

एवं भावनाएं समझनी चाहिए, उनका परिवार में महत्वपूर्ण स्थान होना चाहिए। तभी परिवार सुखी और समृद्ध हो सकेगा। मनुस्मृति में भी कहा गया है कि-

अभिवादनशीलस्य नित्यवृद्धोपसेविनः।
चत्वारि तस्य वर्धनन्ते आयुर्विद्यायशोबलम।।

अर्थात बड़े-बुजुर्गों का नित्य आशीर्वाद लेने एवं उनकी सेवा करने से आयु, विद्या, यश एवं बल इन चारों गुणों में निरंतर वृद्धि होती है। आज आधुनिकता बोध के इस युग में संबंधों एवं रिश्तों में औपचारिकताएं अधिक बढ़ती जा रहीं हैं। उनमें भावनाएं, संवेदनाएं एवं एक दूसरे के प्रति सम्मान तो जैसे उनकी उपयोगिता के आधार पर निर्भर करता है। इसका प्रभाव समाज में मुख्यतः पीढ़ी अंतराल एवं पीढ़ी संघर्ष के रूप में अधिक देखा जा रहा है। वृद्धों को अनुपयोगी वस्तु की तरह घर के किसी कोने में डाल दिया जाता है और उन्हें बात बात पर उपेक्षित किया जाता है। इसका प्रमुख कारण युवाओं में शैक्षिक मूल्य, जीवन-मूल्य एवं संस्कारों का अभाव है। किंतु यह पीढ़ी संघर्ष एक तरफा नहीं है। इसमें बुजुर्ग पीढ़ी के साथ-साथ युवा पीढ़ी भी संघर्षरत है। यदि युवा वर्ग बुजुर्गों का अनादर कर रहा है, तो दूसरी ओर बुजुर्ग भी युवाओं की स्वच्छंद शैली और व्यस्त दिनचर्या को नही समझ पा रही है और युवा की व्यस्तता के कारण कभी-कभी उनकी ओर ध्यान नहीं दे पाता तो इसे वे अपनी उपेक्षा समझ बैठते हैं। ऐसे में आधुनिक साहित्य में इन ज्वलंत समस्याओं को प्रकट करने में साहित्यकारों की भी मुख्य भूमिका रही है। समाज में युवा पीढ़ी जो भौतिक वस्तुओं की चकाचौंध में निरंतर अंधी होती जा रही है, उसे बुजुर्गों के जीवनानुभवी प्रकाशपुंज से सही मार्ग पर लाने में साहित्यकार भी पीछे नहीं है। साहित्यकारों का सदैव यह प्रयास रहा है कि भटके हुए लोगों को रिश्तों एवम् सामाजिक दायित्वों की गरिमा का अहसास कराते हुए सही मार्ग पर लाया जाए। इसके लिए वृद्ध पीढ़ी एवं युवा पीढ़ी को एक दूसरे की भावनाओं एवं संवेदना को समझना होगा। एक ओर युवा पीढ़ी में मूल्य शिक्षा का विकास तथा बुजुर्गों के प्रति हीन दृष्टिकोण को बदलना होगा जिससे उनके जीवन में संस्कार एवं जीवनमूल्यों का समावेश हो सके। वहीं दूसरी ओर बड़े-बुजुर्गों को भी अपने अनुभवों का प्रयोग कर युवा पीढ़ी की भी मानसिकता को समझने की

कोशिश करनी चाहिए। इस प्रकार इस पीढ़ी संघर्ष की समस्या का समाधान उचित स्तर पर किया जा सकता है जिससे वृद्ध और युवा पीढ़ी के सामंजस्य द्वारा समाज तथा राष्ट्र में सहयोग, त्याग और सद्भावना की लहर दौड़ने लगे और विसंगति रहित समाज का विकास एवं उत्थान किया जा सके। प्रस्तुत शोध विषय **'इक्कीसवीं सदी के हिंदी उपन्यासों में पीढ़ी अंतराल के सामाजिक आयाम: वृद्ध-जीवन के विशेष संदर्भ में'** में जीवन के अंतिम पड़ाव में वृद्धों की समस्याओं और पीढ़ी संघर्ष को 21वीं सदी के प्रमुख उपन्यासों के माध्यम से उद्घाटित किया गया है। साथ ही इन प्रमुख रचनाओं में साहित्यकारों ने पीढ़ियों में आपसी सामंजस्य के लिए सुझाव एवं समाधान का भी कहीं-न-कहीं समावेश किया है। इन प्रमुख साहित्यकारों ने एक ओर तो वृद्ध पीढ़ी द्वारा संवेग, मानवीय संवेदना, परोपकार, परंपराओं, संस्कारों एवं जीवन मूल्यों आदि की महत्ता को स्पष्ट किया है। वहीं दूसरी ओर इन संस्कारों एवं जीवन मूल्यों को युवा पीढ़ी के द्वारा आत्मसात करने का मार्ग प्रशस्त किया है जिससे बड़े बुज़ुर्गों के महत्त्व तथा पीढ़ियों में सामंजस्य को आधुनिकतावादी इस युग में पुनर्स्थापित किया जा सके। उपन्यासों में वृद्धों से जुड़ी समस्याओं पर चर्चा करनी है तो प्रेमचंद से प्रारंभ करना उचित होगा। उनके बाद विभिन्न विधाओं में अन्य रचनाकारों ने इस समस्या को उठाया है। नागार्जुन के उपन्यास '**नई पौध'** में दहेज प्रथा, अनमेल विवाह तथा नारी विक्रय जैसी समस्याओं का यथार्थ चित्रण किया गया है। इस उपन्यास में दिखाया गया है कि एक पिता अपने आर्थिक स्वार्थ को पूरा करने के लिए अपनी बेटियों को बेचने का घोर पाप करता है। बेटियों को बाल्यावस्था में किसी बूढ़े को बेच दिया जाता है और वे आधी से अधिक उम्र वैधव्य में बिताती हैं। इसका कारण उसका स्वयं का पिता होता है। बड़े-बूढ़े अपनी परंपराओं में बंधकर ऐसी कुप्रथाओं का साथ देते हैं, किंतु इस उपन्यास के अनुसार नागार्जुन का मानना है कि ऐसी रूढ़ी परंपरावादी समस्याओं का समाधान नई नौजवान पीढ़ी द्वारा ही संभव है। रवींद्र वर्मा ने उपन्यास '**पत्थर ऊपर पानी'** में बड़े ही मार्मिक दृश्य पर प्रकाश डाला है। युवा पीढ़ी वृद्धों को बोझ एवं कोई फालतू सामान जैसा मानती है, जिसे कोई बहाना बनाकर अलग कर दिया जाता है फिर चाहे वह उसे पाल पोस कर बड़ा करने वाले माता-पिता ही हो। **'दौड़'** उपन्यास में पीढ़ी का सामंजस्य एवं माता-पिता की आधुनिक सोच को चित्रित किया गया है।

लेकिन इस आधुनिकता की दौड़ में उनके आहत होने का क्रम बना ही रहता है। यहां माता-पिता बेटे-बहु के अनुसार शहरी व्यवस्था में स्वयं को ढालने हेतु प्रयासरत हैं। **'रिश्तों की आंच'** उपन्यास में उपन्यासकार सूरज सिंह नेगी ने पारिवारिक संगठन में मुखिया की भूमिका पर प्रकाश डाला है। इसमें नई पीढ़ी का पुरानी पीढ़ी के लिए संवेदनशून्यता तथा वैचारिकशून्यता को स्पष्ट किया है। व्यक्ति की उपयोगिता पर उसे याद रखा जाता है और उसकी उपयोगिता न रहने पर उसे दूर कर दिया जाता है। मनुष्य के इस स्वार्थी भावों को इस उपन्यास में अभिव्यक्त किया है। ज्ञान चतुर्वेदी के उपन्यास '**पागलखाना'** में यह दर्शाया गया है कि आधुनिकता के इस वस्तुमोह के युग में किस तरह से सामाजिक मूल्यों एवं सांस्कृतिक मूल्यों को पीछे करके बाजार मूल्यों को सबसे ऊपर माना जा रहा है। यहां पागल और बाजार मुख्य भूमिका में हैं। इस उपन्यास के माध्यम से कहा गया है कि बाजार के पीछे भागते-भागते इस अंधी दौड़ में युवा वर्ग को मूल्य एवं संवेदना की शिक्षा देने वाले बुजुर्गों की पुरानी पीढ़ी पागल-सी ही लगती है। **'वसीयत'** उपन्यास डॉ. सूरज सिंह नेगी ने तीन पीढ़ियों को समानांतर लेकर लिखा है। इस उपन्यास का उद्देश्य पुरानी पीढ़ी को अपने परोपकार, परहित, त्याग, समर्पण आदि गुणों को नई पीढ़ी को देकर उन पर स्वयं भी चलकर जीवन व्यतीत करना है। सूरज सिंह नेगी के उपन्यास '**नियति चक्र'** में वृद्ध का हृदयस्पर्शी मार्मिक चित्रण किया गया है। माता-पिता अपनी संतान पर सब कुछ न्योछावर कर देते हैं किंतु संतान को उनके इस त्याग एवं समर्पण का अहसास उन्हें खो देने के बाद होता है। **'ये कैसा रिश्ता'** उपन्यास में सूरज सिंह नेगी ने पहाड़ी संस्कृति तथा वहां से पलायन करते युवा के मोहभंग की स्थिति का वर्णन किया है। वहां वृद्धों तथा बच्चों की संख्या अधिक है, युवाओं की कम होती संख्या चिंता का कारण बनी हुई है क्योंकि युवा पीढ़ी विदेश में जाकर बस जाती है और वृद्ध माता-पिता उनकी प्रतीक्षा करते रहते हैं। इसी प्रकार की भावना एक गजल में प्रकट की गई है, वह है:-

"बूढ़ी आंखें जोह रहीं एक टुकड़ा संदेश
मां-बाप को छोड़कर बिटवा बसने गया विदेश।
अपना लहू पराया होकर जा बैठा परदेश कहीं
व्यर्थ हो गया रातों रात जागना बूढ़ी आंखों का।।"

---वर्षा सिंह

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि शोध विषय **'इक्कीसवीं सदी के हिंदी उपन्यासों में पीढ़ी अंतराल के सामाजिक आयाम: वृद्ध-जीवन के विशेष संदर्भ में'** के अंतर्गत परंपरावादी जीवन और आधुनिकतावादी जीवन दृष्टिओं में टकराव और सामंजस्य दोनों स्थितियों पर विस्तार से चर्चा की जाएगी। अपने को आधुनिक कहलाने वाली पीढ़ी पुरानी परंपराओं और संस्कारों का वहन करने वाले बुजुर्गों को अपना द्वंद्वी समझती है और उनसे दूर रहना पसंद करती है, वहीं दूसरी ओर कुछ बड़े-बुजुर्ग अभी भी ऐसी रूढ़ परंपराओं के साथ जी रहे हैं जिनका आधुनिक जीवन मूल्य में संचालित करना दुर्लभ है, जैसे बहुओं का घरों से बाहर काम न करना, बेटी को शिक्षा के अवसर देने से पहले विवाह कर देना एवं मरने से पहले पोते का विवाह देखने की इच्छा पूरी करना आदि इस प्रकार बड़े-बुजुर्गों की रूढ़ परंपराओं को साथ लेकर समाज का विकास नहीं हो सकता इसलिए बुजुर्गों को भी ऐसी रूढ़िवादी परंपराओं को छोड़ना होगा और युवा पीढ़ी को आधुनिक जीवन में उपयोगी परंपराओं को अपनाकर ही इस पीढ़ी संघर्ष की समस्या का समाधान करना होगा और उनमें सामंजस्य स्थापित करना होगा। इस शोध कार्य के लिए इक्कीसवीं सदी के उन प्रमुख उपन्यासों को चुना गया है जो समाज में पीढ़ी अंतराल, पीढ़ी संघर्ष की समस्या, बदलते सामाजिक मूल्यों एवं परंपरा और आधुनिक जीवन बोध में द्वंद्व की स्थिति आदि दृष्टियों को केंद्र में रखकर रचे गए हैं। यहां जिन लेखकों की रचनाओं को लिया गया है उन सभी की भाषा एवं शैली भिन्न-भिन्न है किंतु केंद्रीय विषय सभी का समान है। भाषा पात्रानुकूल एवं स्थिति जनक है।

शोध की उपयोगिता एवं महत्त्व

आज आधुनिकता की चकाचौंध में मनुष्य इतना अंधा हो रहा है कि वह अपने भले-बुरे कार्यों को समझ सके, इतना उसके पास समय ही नही है। आज मनुष्य केवल और केवल अपनी प्रगति, प्रतिष्ठा, ऐशो-आराम को लक्ष्य करने के लिए नैतिक मूल्यों की इस तरह से अवहेलना कर रहा है कि इसका परिणाम समाज के लिए बड़ा ही हानिकारक सिद्ध हो सकता है। पाश्चात्य संस्कृति की अंधी दौड़ में मनुष्य अपनी सभ्यता, संस्कृति, मानवीयता तथा रिश्तों के महत्त्व को बाधा मानने लगा है।

1. इस बदलाव का सबसे अधिक प्रभाव पीढ़ी अंतराल के संदर्भ में देखा जा सकता है। वृद्धावस्था को युवा

प्राकृतिक न मानकर एक बीमारी की तरह दिखने लगा है। ऐसे में इस शोध कार्य का महत्त्व और उपयोगिता अधिक बढ़ जाती है जो दिशाहीन होती जा रही युवा पीढ़ी को बड़े-बुजुर्गों तथा रिश्तों के महत्त्व को उजागर कर सके।

2. वृद्धों की विभिन्न समस्याओं के समाधान के लिए दिए गए सुझावों के द्वारा समाज में वृद्धों के महत्व को स्थापित करने की दृष्टि से भी यह शोध कार्य उपयोगी है।
3. इस शोध के माध्यम से युवा वृद्धों के अनुभवों से अवगत हो सकेंगे, जिससे विघटित होते परिवारों में एकता की भावना प्रेरित हो सकेगी और परिवार के सदस्यों में सद्भावना, परोपकार, त्याग, समर्पण आदि मूल्यों के अनुसरण की प्रेरणा मिलेगी।
4. युवा वर्ग का स्वार्थी होना देश के विकास के लिए भी हानिकारक हो सकता है, इसलिए इन मानवीय-मूल्यों का अनुसरण करने से देश सेवा तथा राष्ट्र भावना भी जागृत हो सकेगी।
5. यह शोध कार्य भावी शोधार्थियों को मौलिक जानकारी देकर उन्हें शोध के लिए नई दिशा तथा नई दृष्टि से सोचने की ओर प्रेरित करेगा।
6. इस शोध द्वारा रूढ़ीवादी परंपराओं को छोड़कर उपयोगी तथा अच्छी परंपराओं के साथ आधुनिक सोच स्थापित करने की प्रेरणा मिलेगी।

शोध की आवश्यकता

वृद्ध एवं पीढ़ी संघर्ष की समस्या औद्योगिकीकरण और शहरीकरण के इस युग में ज्वलंत समस्या के रूप में उभर रही है।

युवा पीढ़ी आधुनिक बनने के आडंबर में पुरानी बुजुर्ग पीढ़ी को पिछड़ा और अपने मार्ग में बाधा मानती है, उनकी उपेक्षाएं करती है। युवा पीढ़ी अपने बड़े-बुजुर्गों के साथ रहना भी पसंद नहीं कर रही है। इसी सोच के कारण वृद्ध-आश्रमों की संख्या निरंतर बढ़ती जा रही है। अतः युवा तथा वृद्ध पीढ़ियों में सामंजस्य स्थापित करने हेतु युवा पीढ़ी की वृद्धों के प्रति इस हीन दृष्टिकोण को बदलने के लिए मानवीय संवेदनाओं से परिपूर्ण

हिंदी साहित्य में यह शोध कार्य '**इक्कीसवीं सदी के हिंदी उपन्यासों में पीढ़ी अंतराल के सामाजिक आयाम: वृद्ध-जीवन के विशेष संदर्भ में'** नितांत आवश्यक सिद्ध होता है।

पूर्ववर्ती शोध कार्य

इक्कीसवीं सदी के हिंदी उपन्यास साहित्य में शोध विषय '**इक्कीसवीं सदी के हिंदी उपन्यासों में पीढ़ी अंतराल के सामाजिक आयाम: वृद्ध-जीवन के विशेष संदर्भ में'** पर अभी तक कोई शोध कार्य पूर्ण नही हुआ है किंतु हिंदी साहित्य में कुछ ऐसे शोध कार्य हुए हैं जिनमें पारिवारिक एवं सामाजिक समस्याओं को उठाया गया है, जिसका एक भाग वृद्ध जीवन एवं पीढ़ी संघर्ष भी है किंतु वह मेरे शोध विषय से बिल्कुल भिन्न है। उसकी सूची अग्रलिखित है :-

क्र.सं.	**शोध विषय**	**शोधार्थी**	**विश्वविद्यालय**	**वर्ष**
1	आधुनिक हिंदी कविताओं में सामाजिक चेतना	मुकेश कुमार सिंह	अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी, अलीगढ़	1982
2	मेहरुन्निसा परवेज का कथा साहित्य: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन	मिनी सेम्युल	महात्मा गांधी यूनिवर्सिटी, केरल	2001
3	धर्मवीर भारती के साहित्य में जीवनमूल्य	बेबी सचन	बुंदेलखंड यूनिवर्सिटी, झांसी	2002
4	आठवे दशक के बाद का हिंदी कथा साहित्य: कथात्मक चिंतन और समय का सत्य	राहुल मिश्र	बुंदेलखंड यूनिवर्सिटी, झांसी	2004
5	कमलेश्वर के कथा साहित्य में जीवन-मूल्य	एस.श्रीदेवी	यूनिवर्सिटी ऑफ केरल, केरल	2012
6	नागार्जुन के कथा साहित्य में जनजीवन चेतना	मेरी स्टेला	मैसूर यूनिवर्सिटी, मैसूर	2015
7	काशीनाथ सिंह के कथा साहित्य में सामाजिक यथार्थ का स्वरूप और विश्लेषण	संतोष कुमार गुप्ता	उत्तर बंग विश्वविद्यालय, दार्जिलिंग	2018

उपरोक्त जो भी शोध कार्य हुए हैं, वह सामाजिक यथार्थ एवं चेतना को इंगित करते हैं। किंतु मेरा शोध विषय इन शोध विषयों से बिल्कुल भिन्न होगा क्योंकि मेरे शोध विषय में परिवार रूपी पेड़ की जड़ अर्थात वृद्धों की समस्याओं एवं पीढ़ी संघर्ष से संबंधित है जो समाज तथा परिवार दोनों में वृद्धों की स्थिति को उजागर करेगा। चूंकि यह समाज की ज्वलंत समस्या है इसीलिए इसे करने के लिए मैं प्रेरित हुई हूं। मेरे शोध विषय के आधार-

ग्रंथ भी पूर्व में हुए शोध कार्यों से नितांत भिन्न हैं। अतः कहा जा सकता है कि शोध विषय '**इक्कीसवीं सदी के हिंदी उपन्यासों में पीढ़ी अंतराल के सामाजिक आयाम: वृद्ध जीवन के विशेष संदर्भ में'** पूर्णतः मौलिक है। साथ ही भावी शोधार्थियों को नए दृष्टिकोण से विचार करने में सहायक होगा।

शोध के उद्देश्य

1. प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य समाज में वृद्धों की यथार्थ स्थिति को दिखाते हुए नई पीढ़ी (युवा पीढ़ी) तथा पुरानी पीढ़ी(वृद्ध पीढ़ी) में सामंजस्य का मार्ग प्रशस्त करना है।
2. भारतीय संस्कृति के धर्मग्रंथों में बड़े-बुजुर्गों के प्रति जो नैतिक मूल्य एवं आदर्श भावनाऐं रहीं हैं, उन्हें भावी पीढ़ी में पिरोकर उनके व्यवहारिक जीवन में लाना इस शोध का दूसरा प्रमुख उद्देश्य है।
3. इस शोध का मुख्य उद्देश्य यह भी बताना है कि समाज एवं परिवार में प्रचलित प्रमुख समस्याओं को देखकर हिंदी साहित्यकार भी चुप नहीं बैठे हैं बल्कि बहुत पहले से इस समस्या को उठाने और साहित्य के माध्यम से सुलझाने के लिए संघर्षशील हैं। समाज एवं परिवार में उपेक्षित हो रहे वृद्ध, पीढ़ी-संघर्ष एवं पारिवारिक विघटन जैसी समस्याओं को उठाने में हिंदी साहित्य ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है।
4. इस शोध का उद्देश्य साहित्य के माध्यम से परिवार में वृद्धों के प्रति सम्मान व संवेदना आदि भावनाओं को जागृत करना है। बचपन में बच्चों को माता-पिता की जितनी आवश्यकता होती है, उतनी ही आवश्यकता वृद्ध माता-पिता को अपने बच्चों की होती है। बुढ़ापे में दादा-दादी, माता-पिता आदि बड़े-बुजुर्गों को भी बच्चों के समान स्नेह तथा ध्यान रखने की आवश्यकता है।
5. इस शोध का उद्देश्य युवा पीढ़ी द्वारा वृद्ध पीढ़ी के प्रति सकारात्मक सोच को स्थापित करने का प्रयास रहेगा क्योंकि युवा पीढ़ी वृद्धों की सलाह को अपने मार्ग में बाधा समझती है। उनको स्नेह एवम् आशीर्वाद सब बेकार की बातें लगतीं हैं। उनके अनुभवों की उपेक्षा तक करने में बिल्कुल हिचकिचाते नहीं हैं। इस प्रकार की नकारात्मक सोच को सकारात्मक बनाने का प्रयास इस शोध कार्य द्वारा किया जा सकेगा।

शोध विधियां/प्रविधियां

प्रस्तावित शोध को करते समय शोध की मौलिकता बनाए रखने और प्राथमिक आंकड़ों को एकत्रित करने के लिए विभिन्न शोध विधियों/प्रविधियों का प्रयोग किया जाएगा। प्रस्तुत शोध समस्या **'इक्कीसवीं सदी के हिंदी उपन्यासों में पीढ़ी अंतराल के सामाजिक आयाम: वृद्ध-जीवन के विशेष संदर्भ में'** सामाजिक चेतना को जागृत करने में महत्वपूर्ण कदम है। इसलिए शोध की विधियां/प्रविधियां भी व्यवहारिक और वैज्ञानिक रहेंगी, जिससे कि वृद्धों की समस्याओं एवं पीढ़ी संघर्ष को साहित्य के माध्यम से समझा जा सके और साहित्य में दिए गए इन समस्याओं के समाधानों को व्यवहार में लाया जा सके। इस शोध कार्य को पूरा करने के लिए **विश्लेषणात्मक, व्याख्यात्मक एवं विवरणात्मक** के साथ-साथ **अनुसूची, प्रश्नावली, साक्षात्कार तथा सर्वेक्षण** जैसी व्यवहारिक विधियों का प्रयोग किया जायेगा |

रूपरेखा:

प्रथम अध्याय - हिंदी उपन्यास और आधुनिकता

1.1 हिंदी उपन्यास और समाज

1.2 हिंदी उपन्यासों में आधुनिकता और परंपरागत मूल्यों के साथ उनकी द्वन्द्वात्मकता

1.3 संयुक्त परिवार और आधुनिकता के तनाव

1.4 हिंदी उपन्यासों में आधुनिकता के तनाव और मूल्यपरक प्रभाव

द्वितीय अध्याय - वृद्धावस्था चिंतन: अवधारणा एवं आवश्यकता

2.1 वृद्धावस्था: अर्थ, परिभाषा एवं लक्षण

2.2 वृद्धावस्था: आधुनिक समाज

2.3 धनी एवं निर्धन वृद्ध महिला एवं पुरुष की मन:स्थिति : एक विवेचन

2.4 वृद्धावस्था: आत्मनिष्ठ दृष्टि

तृतीय अध्याय - हिंदी उपन्यासों में चित्रित पीढ़ी अंतराल

3.1 इक्कीसवीं सदी से पूर्व हिंदी उपन्यासों में चित्रित पीढ़ी अंतराल

3.2 इक्कीसवीं सदी के हिंदी उपन्यासों में चित्रित पीढ़ी अंतराल

चतुर्थ अध्याय- हिंदी उपन्यासों में पीढ़ी अंतराल: एक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण

5.1 संवेदनाओं की सूक्ष्म अभिव्यक्ति

5.2 नई एवं पुरानी पीढ़ियों में मानसिक द्वंद्व

5.3 आर्थिक स्थिति के कारण बदलते सामाजिक मूल्य

5.4 आधुनिकता: बदलते सामाजिक मूल्य

पंचम अध्याय- पीढ़ी अंतराल के सामाजिक आयाम: मूल्यांकन एवं उपसंहार

परिशिष्ट-

नोट:- शोध निर्देशक की सलाह एवं निर्देश से शोध रूपरेखा में 20 प्रतिशत का परिवर्तन संभव है।

संदर्भ-ग्रंथ सूची

आधार ग्रंथ

उपन्यास:-

क्र. सं.	उपन्यास	उपन्यासकार	प्रकाशक/प्रकाशन	संस्करण
1	अग्निपंखी	सूर्यबाला	प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली	2011 ई.
2	गिलिगडु	चित्रा मुद्गल	सामयिक प्रकाशक, नई दिल्ली	2002 ई
3	चार दरवेश	हृदयेश	हिंदी बुक सेंटर, नई दिल्ली	2011 ई.
4	तिनका तिनके के पास	अनामिका	वाणी प्रकाशन,दिल्ली	2008 ई
5	दौड़	ममता कालिया	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली	2000 ई.
6	नियति चक्र	सूरज सिंह नेगी	सनातन प्रकाशन, जयपुर	2019 ई.
7	पागलखाना	ज्ञान चतुर्वेदी	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली	2018 ई.
8	पत्थर ऊपर पानी	रवींद्र वर्मा	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली	2000 ई.
9	फिर लौटते हुए	राकेश वत्स	राजपाल प्रकाशन,दिल्ली	2003 ई
10	ये कैसा रिश्ता	सूरज सिंह नेगी	हिंदी साहित्य निकेतन, बिजनौर	2020 ई
11	रिश्तों की आंच	सूरज सिंह नेगी	नवजीवन पब्लिकेशन, टोंक	2016 ई
12	रेहन पर रग्घू	काशीनाथ सिंह	राजकमल प्रकाशन ,दिल्ली	2008 ई
13	वसीयत	सूरज सिंह नेगी	साहित्यागार प्रकाशन, जयपुर	2018 ई.
14	समय सरगम	कृष्णा सोबती	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली	2008 ई.

15	शेष कादंबरी	अलका सरावगी	राजकमल प्रकाशन,दिल्ली	2002 ई

सहायक-ग्रंथ सूची

सहायक ग्रंथ :-

क्र.सं.	रचनाएँ	रचनाकर	प्रकाशक	संस्करण
1	कहानी की समाजशास्त्रीय समीक्षा	रमेश उपाध्याय	नमन प्रकाशन, नई दिल्ली	1999
2	कहानियां रिश्तों की: बड़े-बुजुर्ग	अखिलेश	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली	2014
3	प्रेमचंद की कहानियां: संवेदना एवं शिल्प	डॉ.रामकिशोर शर्मा	श्यामा प्रकाशन, इलाहबाद	2009
4	रामदरश मिश्र की कहानियों में पारिवारिक संबंधों का स्वरूप	डॉ. अमिता	स्वराज प्रकाशन, दिल्ली	2006
5	वैश्विक परिदृश्य में नई सहस्त्राब्दी का भारत: विमर्श के विविध आयाम'	डॉ. वीरेंद्र सिंह यादव	ओमेगा पब्लिकेशंस, नई दिल्ली	2012
6	वृद्ध, विधवा और परित्यक्ता	कृष्णानंद	प्रतिभा प्रकाशन, पटना	2003
7	वृद्धावस्था का सच	विमला लाल	कल्याणी शिक्षा परिषद, नई दिल्ली	2019
8	वृद्धावस्था की कहानियां	गिरिराज शरण	प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली	1996
9	वृद्धावस्था विमर्श	चंद्रमौलेश्वर प्रसाद	परिलेख प्रकाशन, नजीबाबाद	2016
10	साठोत्तरी कहानी में परिवार	इंदु वीरेंद्र	संजय प्रकाशन, नई दिल्ली	2009
11	समकालीन विमर्शवादी उपन्यास	रमेश चंद्र मीणा	अनुज्ञा बुक्स, दिल्ली	2020
12	हिंदी एकांकी में जीवन-मूल्य	अंजू लता गौड़	शलभ प्रकाशन, मेरठ	1994
13	हिंदी उपन्यासों में सामाजिक चेतना	राजेश रानी	के.के.पब्लिकेशंस,दिल्ली	2009

शब्दकोश

- ✓ हिंदी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी, राजपाल एंड संस, 2005.
- ✓ व्यवहारिक सामान्य हिंदी, डॉ. राघव प्रकाश, पिंक सिटी पब्लिशर्स, जयपुर 2012.

पत्र-पत्रिकाएं-

1. शोधादर्श
2. अक्षरवार्ता
3. साहित्य वीथिका

4. योजना

5. सृजना

6. संगम

7. ई-भास्कर

8. पाक्षिक समाचार सफ़र